REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2025

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी साहित्य की भूमिका

प्रा . डॉ . राजेंद्र कैलास वडजे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, ए . आर . बुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय , सोलापुर.

सारांश :

भारत सरकार द्वारा लागू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, रोजगारोन्मुख और भारतीय संस्कृति से जुड़ा बनाना है। इस नीति में हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका मानी गई है क्योंकि हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा और भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने पर विशेष बल दिया गया है। हिंदी साहित्य विद्यार्थियों में भाषा कौशल, रचनात्मकता, संवेदनशीलता और नैतिकता का विकास करता है। साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों को भारतीय इतिहास, संस्कृति, परंपरा और सामाजिक जीवन की गहरी समझ प्राप्त होती है। हिंदी साहित्य राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय को मजबूत करने का माध्यम भी है। कबीर, तुलसीदास, प्रेमचंद और महादेवी वर्मा जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ विद्यार्थियों में मानवता, समानता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ साहित्य और कला को भी महत्व दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। इस प्रकार हिंदी साहित्य नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों को सफल बनाने में एक सशक्त साधन के रूप में कार्य करता है।

बीज शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, हिंदी साहित्य, मातृभाषा आधारित शिक्षा, भारतीय भाषाएँ, सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्य, भाषा कौशल, रचनात्मकता, सामाजिक संवेदनशीलता, राष्ट्रीय एकता, व्यक्तित्व विकास, सर्वांगीण विकास, शिक्षण प्रक्रिया, मूल्य आधारित शिक्षा, शिक्षा सुधार।

अध्ययन की आवश्यकता :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को ज्ञान, संस्कृति और नैतिक मूल्यों के आधार पर विकसित करने का प्रयास करती है। इस नीति में भारतीय भाषाओं तथा मातृभाषा आधारित शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। ऐसी स्थिति में हिंदी साहित्य की भूमिका का अध्ययन आवश्यक हो जाता है, क्योंकि हिंदी साहित्य भारतीय समाज, संस्कृति, इतिहास और जीवन मूल्यों का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह विद्यार्थियों में भाषा ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना का विकास करता है। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अधिक तकनीकी और व्यावसायिक होता जा रहा है, जिसके कारण साहित्य और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा देखी जा रही है। विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य के प्रति घटती रुचि, सांस्कृतिक जागरूकता में कमी तथा भाषा कौशल के कमजोर होते स्तर को देखते हुए इस

विषय का अध्ययन और अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है, जिसमें साहित्य की भूमिका अत्यंत आवश्यक है। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है कि हिंदी साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय और मानवीय दृष्टिकोण को सुदृढ़ किया जा सकता है। साथ ही यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से लागू करने में हिंदी साहित्य किस प्रकार योगदान दे सकता है। इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में हिंदी साहित्य की उपयोगिता, महत्व और प्रभाव का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध "राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी साहित्य की भूमिका" विषय पर आधारित है। इस अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों, सिद्धांतों तथा भारतीय भाषाओं के विकास से संबंधित प्रावधानों का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से हिंदी साहित्यके माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना, भाषा कौशल तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का अध्ययन किया गया है। शोध में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि हिंदी साहित्य केवल भाषा अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपरा और मानवीय मूल्यों का संवाहक भी है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा आधारित शिक्षा तथा भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है, जिससे हिंदी साहित्य की उपयोगिता और अधिक बढ़ जाती है। इस अध्ययन में विभिन्न पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित सामग्री का उपयोग किया गया है। शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि हिंदी साहित्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, रचनात्मकता तथा सामाजिक संवेदनशीलता को किस प्रकार प्रभावित करता है।

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, समावेशी तथा भारतीय संस्कृति से जुड़ी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस नीति का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करना ही नहीं, बल्कि उनमें नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना और रचनात्मक सोच का विकास करना भी है। इसी संदर्भ में हिंदी साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। हिंदी साहित्य भारतीय समाज, संस्कृति, इतिहास और जीवन मूल्यों का दर्पण है। यह विद्यार्थियों को भाषा ज्ञान के साथ-साथ संवेदनशीलता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना प्रदान करता है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा और भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने पर विशेष बल दिया गया है, जिससे हिंदी साहित्य का महत्व और अधिक बढ़ गया है। हिंदी साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय और मानवीय मूल्यों का विकास होता है। साहित्यकारों की रचनाएँ विद्यार्थियों को समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराती हैं तथा उन्हें सही दिशा में सोचने और कार्य करने की प्रेरणा देती हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को सफल बनाने में हिंदी साहित्य एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करता है।

उद्देश्य :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी साहित्य का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, परंपरा और नैतिक मूल्यों से जोड़ना है। हिंदी साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषा कौशल, रचनात्मकता, संवेदनशीलता तथा सामाजिक चेतना का विकास किया जाता है। नई शिक्षा नीति मातृभाषा आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करती है, जिससे शिक्षा अधिक सरल, प्रभावी और समझने योग्य बन सके। हिंदी साहित्य विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, मानवीय मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करता है। इसके साथ ही साहित्य के अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव होता है तथा उन्हें भारतीय समाज और संस्कृति की गहरी समझ प्राप्त होती है। इस प्रकार हिंदी साहित्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विषय विवेचन :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिकता और भारतीयता के समन्वय के साथ विकसित करने का प्रयास करती है। विभिन्न विद्वानों, शिक्षाविदों और साहित्यकारों ने इस नीति में हिंदी साहित्य की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार हिंदी साहित्य केवल भाषा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपरा, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना का संवाहक भी है। साहित्यकारों का मत है कि हिंदी साहित्य विद्यार्थियों में मानवीय संवेदनाओं, रचनात्मक सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करता है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है, जिससे हिंदी भाषा और साहित्य को शिक्षा के केंद्र में स्थान प्राप्त हुआ है। कई शोधों में यह स्पष्ट किया गया है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विषयों को अधिक सरलता और प्रभावी ढंग से समझ पाते हैं।

प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर तथा कबीर जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ विद्यार्थियों को नैतिकता, समानता, राष्ट्रप्रेम और मानवीय मूल्यों की शिक्षा प्रदान करती हैं। शिक्षाविदों के अनुसार हिंदी साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास तथा सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त, नई शिक्षा नीति में कला, साहित्य और संस्कृति को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है। इससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य और विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को सफल बनाने में एक प्रभावशाली और आवश्यक माध्यम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, समावेशी और भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाने का प्रयास करती है। इस नीति में मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं को शिक्षा का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है किंतु वर्तमान समय में हिंदी साहित्य के अध्ययन और उसके व्यावहारिक उपयोग को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पा रहा है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी एवं व्यावसायिक विषयों पर अधिक ध्यान दिए जाने के कारण साहित्य और मानवीय मूल्यों से संबंधित अध्ययन धीरे-धीरे सीमित होते जा रहे हैं। विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की घटती रुचि भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में भाषा कौशल, नैतिक मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक चेतना का अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा है। नई शिक्षा नीति हिंदी साहित्य को शिक्षा के साथ जोड़कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है परंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं, जैसे योग्य शिक्षकों की कमी, आधुनिक शिक्षण संसाधनों का अभाव तथा हिंदी साहित्य को रोजगार से जोड़कर देखने की सीमित दृष्टि।

इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण और अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी साहित्य का महत्व कई बार कम आँका जाता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी साहित्य की भूमिका का अध्ययन किया जाए तथा यहसमझा जाए कि हिंदी साहित्य किस प्रकार विद्यार्थियों में सांस्कृतिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता और मानवीय दृष्टिकोण के विकास में योगदान दे सकता है। यही इस शोध की प्रमुख समस्या है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के बावजूद साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है। हिंदी साहित्य विद्यार्थियों को समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है। इस प्रकार शोध का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में हिंदी साहित्य के महत्व और उसकी प्रभावशीलता को स्पष्ट करना है।

दायरा और सीमाएँ :

प्रस्तुत अध्ययन का दायरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत हिंदी साहित्य की भूमिका, महत्व तथा उसके शैक्षिक प्रभावों के अध्ययन तक सीमित है। इस शोध में विशेष रूप से मातृभाषा आधारित शिक्षा, भारतीय भाषाओं के संवर्धन, नैतिक मूल्यों के विकास तथा

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में हिंदी साहित्य के योगदान का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के अंतर्गत हिंदी साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता तथा राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास को समझने का प्रयास किया गया है। यह शोध मुख्यतः माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा स्तर पर हिंदी साहित्य की उपयोगिता और उसकी शैक्षिक भूमिका पर केंद्रित है। अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित दस्तावेजों, पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा अन्य द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

इस शोध की कुछ सीमाएँ भी हैं। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होने के कारण इसमें प्रत्यक्ष सर्वेक्षण या क्षेत्रीय अध्ययन को शामिल नहीं किया गया है। शोध का क्षेत्र हिंदी साहित्य तक सीमित है, इसलिए अन्य भारतीय भाषाओं और साहित्य की भूमिका का विस्तृत अध्ययन इसमें नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के व्यावहारिक क्रियान्वयन और उसके दीर्घकालिक प्रभावों का पूर्ण मूल्यांकन वर्तमान समय में संभव नहीं है। इसलिए प्रस्तुत निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य एवं दस्तावेजों के आधार पर तैयार किए गए हैं।

परिणाम :

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत हिंदी साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषा कौशल, अभिव्यक्ति क्षमता, रचनात्मकता तथा आलोचनात्मक सोच का विकास होता है। इसके साथ ही विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक संवेदनशीलता भी सुदृढ़ होती है। अध्ययन के परिणामों से यह भी पता चलता है कि मातृभाषा आधारित शिक्षा में हिंदी साहित्य का उपयोग शिक्षण प्रक्रिया को अधिक सरल, रोचक और प्रभावी बनाता है। इससे विद्यार्थियों की समझने की क्षमता बढ़ती है और सीखने की प्रक्रिया अधिक स्वाभाविक हो जाती है। हिंदी साहित्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त यह भी पाया गया कि हिंदी साहित्य राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और मानवीय दृष्टिकोण के विकास में सहायक है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा में तकनीकी विषयों का महत्व बढ़ा है, फिर भी हिंदी साहित्य का समावेश शिक्षा को संतुलित और मूल्य-आधारित बनाता है। इस प्रकार अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को सफल बनाने में हिंदी साहित्य एक सशक्त और आवश्यक माध्यम के रूप में कार्य करता है।

निष्कर्ष :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, लचीला और भारतीय भाषाओं के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास करती है। इस नीति में हिंदी साहित्य की भूमिका को केवल एक भाषा विषय के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, सांस्कृतिक विकास और मूल्य-आधारित शिक्षा के महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य विद्यार्थियों में भाषा कौशल के साथ-साथ विचारशीलता, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करता है। साहित्यिक रचनाएँ जीवन के विविध अनुभवों, सामाजिक समस्याओं और मानवीय संवेदनाओं को समझने का अवसर प्रदान करती हैं, जिससे विद्यार्थियों में सहानुभूति और सामाजिक जागरूकता बढ़ती है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने पर विशेष बल दिया गया है, जिसका सीधा संबंध हिंदी साहित्य के महत्व से जुड़ता है। यह देखा गया है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विषयों को अधिक सहजता से समझते हैं और उनका सीखना अधिक प्रभावी होता है।

इसके अतिरिक्त, हिंदी साहित्य राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रेमचंद, कबीर, तुलसीदास और अन्य साहित्यकारों की रचनाएँ विद्यार्थियों में नैतिकता, समानता और मानवीय मूल्यों की भावना विकसित करती हैं। हालाँकि, व्यवहार में यह भी देखा गया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी विषयों के बढ़ते प्रभाव के कारण साहित्यिक

अध्ययन को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पा रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा नीति के उद्देश्यों के अनुरूप हिंदी साहित्य को पाठ्यक्रम में प्रभावी ढंग से शामिल किया जाए, ताकि शिक्षा का संतुलित और सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। इस प्रकार चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में हिंदी साहित्य एक सशक्त, प्रभावी और आवश्यक माध्यम के रूप में कार्य करता है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को सफल बनाने में हिंदी साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी साहित्य न केवल भाषाशिक्षण का माध्यम है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्यों के निर्माण तथा सांस्कृतिक चेतना के विस्तार में भी सहायक है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषा कौशल, अभिव्यक्ति क्षमता, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच का विकास होता है। साथ ही यह उन्हें भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों से जोड़ता है, जिससे उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनशीलता बढ़ती है। मातृभाषा आधारित शिक्षा के संदर्भ में हिंदी साहित्य शिक्षण प्रक्रिया को अधिक सरल, प्रभावी और रोचक बनाता है। इससे विद्यार्थियों की समझने की क्षमता में वृद्धि होती है और सीखने की प्रक्रिया अधिक स्थायी बनती है। इसके अलावा हिंदी साहि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय और सामाजिक सद्भाव को भी मजबूत करता है। हालाँकि आधुनिक शिक्षा में तकनीकी और व्यावसायिक विषयों का प्रभाव बढ़ रहा है, फिर भी हिंदी साहित्य का समावेश शिक्षा को संतुलित और मूल्यआधारित बनाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों की प्राप्ति में हिंदी साहित्य एक सशक्त और आवश्यक माध्यम है।

संदर्भ :

1. भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. NCERT। (2021)। National Curriculum Framework related documents। नई दिल्ली।
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप। हिंदी साहित्य का इतिहास। (विभिन्न संस्करण)।
4. वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर। संस्कृति के चार अध्याय।
5. प्रेमचंद, मुंशी। निर्मला एवं अन्य कहानियाँ।
6. शर्मा, नगेन्द्र। आधुनिक हिंदी साहित्य।
7. विभिन्न शोध-पत्र एवं लेख जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और हिंदी साहित्य के शैक्षिक महत्व पर आधारित हैं।
8. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध नीतिगत दस्तावेज और रिपोर्ट्स।